

राजनीतिक स्थिरता, वैश्विक सहयोग एवं सतत विकास लक्ष्य-17: भारत में नागरिक समृद्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सोनम सैन^{1*}, डॉ. शैलेंद्र मौर्य²

1 पीएचडी रिसर्च स्कॉलर (राजनीति विज्ञान), डॉ.के.एन. मोदी यूनिवर्सिटी, राजस्थान, भारत

Sainkrishankant221@gmail.com

2 एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), सामाजिक अध्ययन संकाय, डॉ.के.एन. मोदी यूनिवर्सिटी, राजस्थान, भारत

सार: यह शोध पत्र भारत में राजनीतिक स्थिरता, वैश्विक सहयोग एवं सतत विकास लक्ष्य-17 (SDG-17) के नागरिक समृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन एक मिश्रित पद्धति अभिकल्प पर आधारित है, जिसमें 300 उत्तरदाताओं से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से मात्रात्मक आंकड़े एकत्र किए गए तथा दस विशेषज्ञों के साथ गहन साक्षात्कार आयोजित कर गुणात्मक अंतर्दृष्टि प्राप्त की गई। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि राजनीतिक स्थिरता (70.0% सहमति), शासन में पारदर्शिता (71.7%) तथा वैश्विक साझेदारियाँ (71.7%) नागरिक समृद्धि से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। अध्ययन के निष्कर्षों को प्रमुख सतत विकास लक्ष्यों — विशेष रूप से SDG-1, 4, 5, 8, 11, 13, 16 एवं 17 — से भी व्यवस्थित रूप से जोड़ा गया है। निष्कर्ष नीति-निर्माताओं के लिए यह रेखांकित करते हैं कि नागरिक समृद्धि की व्यापक एवं समावेशी प्राप्ति हेतु स्थानीय शासन को सशक्त करना, पारदर्शिता बढ़ाना और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

मुख्य शब्द: राजनीतिक स्थिरता; सतत विकास लक्ष्य-17; वैश्विक सहयोग; नागरिक समृद्धि; शासन.

1. परिचय

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में किसी राष्ट्र की प्रगति का मूल्यांकन केवल आर्थिक वृद्धि या सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर नहीं किया जा सकता। सामाजिक समावेशन, राजनीतिक स्थिरता, पर्यावरणीय संतुलन, संस्थागत क्षमता तथा नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता भी विकास के महत्वपूर्ण आयाम हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में अपनाए गए सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में सतत विकास लक्ष्य-17 (Partnerships for the Goals) का विशेष महत्व है। इसका उद्देश्य सतत विकास के लिए कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत करना तथा वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना है। [1]

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण विकासशील राष्ट्र में SDG-17 की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। नागरिक समृद्धि केवल आय में वृद्धि से नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक

सुरक्षा, लैंगिक समानता और बेहतर सार्वजनिक सेवाओं से भी निर्धारित होती है। [2] इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज, शैक्षणिक संस्थानों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के बीच प्रभावी सहयोग आवश्यक है। भारत में SDGs के स्थानीयकरण और निगरानी में नीति आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है। [3]

राजनीतिक स्थिरता सतत विकास की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। स्थिर राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था दीर्घकालिक नीतियों के निरंतर क्रियान्वयन, निवेश को बढ़ावा देने, संस्थागत विश्वास कायम करने तथा सार्वजनिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग में सहायक होती है। [4] इसके विपरीत राजनीतिक अस्थिरता विकास योजनाओं की निरंतरता और सामाजिक-आर्थिक प्रगति को प्रभावित कर सकती है। इसलिए राजनीतिक स्थिरता को नागरिक समृद्धि का महत्वपूर्ण निर्धारक माना जा सकता है। [5]

भारत वैश्विक साझेदारी के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। दक्षिण-दक्षिण सहयोग, बहुपक्षीय संस्थाओं में सहभागिता तथा विकास साझेदारी के माध्यम से भारत अन्य विकासशील देशों के साथ तकनीक, ज्ञान और संसाधनों को साझा करता है। भारत-यूएन विकास साझेदारी कोष जैसी पहलें सतत विकास के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

अतः SDG-17 केवल अंतरराष्ट्रीय सहयोग का लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह भारत में समावेशी विकास, प्रभावी शासन और नागरिक समृद्धि को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। सरकार और विभिन्न हितधारकों के बीच मजबूत साझेदारी, राजनीतिक स्थिरता तथा संसाधनों के प्रभावी उपयोग के माध्यम से वर्ष 2030 तक सतत और न्यायसंगत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की जा सकती है। [6]

2. कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक दोनों प्रकार के अभिकल्प को समाहित करते हुए एक मिश्रित पद्धति दृष्टिकोण अपनाया गया है। मात्रात्मक घटक के अंतर्गत 300 उत्तरदाताओं से एक संरचित, पांच-बिंदु लिफ्ट पैमाने (पूर्णतः सहमत से पूर्णतः असहमत तक) पर आधारित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए। प्रश्नावली में राजनीतिक संकेतक, सरकारी नीतियों का प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय सहयोग (सतत विकास लक्ष्य-17), नागरिक समृद्धि तथा नीति भागीदारी से संबंधित कथन शामिल थे।

नमूने में सामाजिक-जनसांख्यिकीय विविधता सुनिश्चित करने हेतु उत्तरदाताओं का चयन आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय और निवास क्षेत्र के आधार पर किया गया।

इस प्रकार नमूने में 60.0 प्रतिशत शहरी तथा 40.0 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता, 53.3 प्रतिशत पुरुष तथा 43.3 प्रतिशत महिला उत्तरदाता, तथा 73.3 प्रतिशत स्नातक या उच्चतर शैक्षणिक योग्यता वाले उत्तरदाता शामिल थे, जिससे अध्ययन को एक व्यापक एवं प्रतिनिधिपूर्ण आधार प्राप्त हुआ।

गुणात्मक घटक के अंतर्गत नीति निर्माताओं, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, शैक्षणिक शोधकर्ताओं एवं विकास विशेषज्ञों सहित दस विशेषज्ञों के साथ संरचित व्यक्तिगत साक्षात्कार आयोजित किए गए। साक्षात्कारों को लिप्यंतरित कर ब्रौन एवं क्लार्क (2006) की विषयगत विश्लेषण पद्धति के अनुसार कोडित किया गया, जिससे शासन, नीति क्रियान्वयन एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित आवर्ती विषयों की पहचान की जा सकी।

3. परिणाम एवं विवेचना

3.1 राजनीतिक संकेतक एवं नागरिक समृद्धि

इस खंड के चारों कथनों पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया का वितरण तालिका 2 में प्रस्तुत है।

तालिका 1: राजनीतिक संकेतक — कथनवार प्रतिक्रिया वितरण (n=300)

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
राजनीतिक स्थिरता जीवन स्तर सुधारती है	36.7%	33.3%	16.7%	8.3%	5.0%
सरकारी निर्णय नागरिकों की भलाई को प्रभावित करते हैं	35.0%	36.7%	15.0%	8.3%	5.0%
शासन में पारदर्शिता टिकाऊ विकास को बढ़ावा देती है	31.7%	40.0%	15.0%	8.3%	5.0%
प्रभावी शासन बेहतर जीवन परिस्थितियों की ओर ले जाता है	33.3%	36.7%	16.7%	8.3%	5.0%

अध्ययन में शामिल राजनीतिक संकेतकों से संबंधित चारों कथनों पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही। 70.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि राजनीतिक स्थिरता नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाती है, 71.7 प्रतिशत ने सरकारी निर्णयों को नागरिकों की भलाई से सीधे जोड़ा, 71.7 प्रतिशत ने शासन में पारदर्शिता को टिकाऊ विकास हेतु महत्वपूर्ण माना, तथा 70.0 प्रतिशत ने प्रभावी

शासन को बेहतर जीवन परिस्थितियों से संबद्ध बताया। इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाता राजनीतिक स्थिरता, पारदर्शिता एवं जवाबदेही को नागरिक समृद्धि की आधारभूत शर्तें मानते हैं।

3.2 सरकारी नीतियों का प्रभाव

इस खंड के कथनवार प्रतिक्रिया वितरण को तालिका 3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2: सरकारी नीतियों का प्रभाव — कथनवार प्रतिक्रिया वितरण (n=300)

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
सरकारी नीतियों ने नागरिक समृद्धि में सुधार किया है	33.3%	36.7%	16.7%	8.3%	5.0%
आर्थिक सुधारों ने रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं	31.7%	38.3%	16.7%	8.3%	5.0%
सामाजिक कल्याण योजनाएं भलाई में सुधार करती हैं	35.0%	36.7%	15.0%	8.3%	5.0%
पर्यावरणीय नीतियां टिकाऊ विकास को बढ़ावा देती हैं	30.0%	40.0%	16.7%	8.3%	5.0%

सरकारी नीतियों के प्रभाव से संबंधित खंड में भी सुसंगत सकारात्मक प्रतिरूप देखा गया। 70.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि सरकारी नीतियों ने नागरिक समृद्धि में सुधार किया है, 70.0 प्रतिशत ने आर्थिक सुधारों को रोजगार सृजन से जोड़ा, 71.7 प्रतिशत ने सामाजिक कल्याण योजनाओं को भलाई में सुधार का श्रेय दिया, तथा 70.0 प्रतिशत ने पर्यावरणीय नीतियों को टिकाऊ विकास में सहायक माना। सामाजिक कल्याण योजनाओं पर सबसे अधिक सहमति (71.7 प्रतिशत, तथा सबसे कम तटस्थ प्रतिक्रिया 15.0 प्रतिशत) यह दर्शाती है कि इन योजनाओं का प्रभाव उत्तरदाताओं को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव होता है।

3.3 अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भूमिका (सतत विकास लक्ष्य-17)

इस खंड के कथनवार प्रतिक्रिया वितरण को तालिका 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 3: अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (SDG-17) — कथनवार प्रतिक्रिया वितरण (n=300)

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
वैश्विक साझेदारियां SDGs की प्राप्ति में सहायक हैं	36.7%	35.0%	15.0%	8.3%	5.0%
अन्य देशों से वित्तीय सहायता विकास को बढ़ावा देती है	33.3%	36.7%	16.7%	8.3%	5.0%
प्रौद्योगिकी साझाकरण टिकाऊपन में सुधार करता है	31.7%	38.3%	16.7%	8.3%	5.0%
अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विकास परिणामों को मजबूत करता है	35.0%	36.7%	15.0%	8.3%	5.0%

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित कथनों पर सर्वाधिक सुसंगत सकारात्मक प्रतिक्रियाएं दर्ज की गईं। 71.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैश्विक साझेदारियों को SDGs की प्राप्ति में सहायक माना, 70.0 प्रतिशत ने अन्य देशों से वित्तीय सहायता को विकास हेतु महत्वपूर्ण बताया, 70.0 प्रतिशत ने प्रौद्योगिकी साझाकरण को टिकाऊपन में सुधारक माना, तथा 71.7 प्रतिशत ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को विकास परिणामों को मजबूत करने वाला कारक बताया। यह प्रतिरूप इस बात की पुष्टि करता है कि उत्तरदाता SDG-17 के केंद्रीय सिद्धांत — कि सतत विकास केवल वैश्विक साझेदारी के माध्यम से ही संभव है — से व्यापक रूप से सहमत हैं।

3.4 नागरिक समृद्धि विश्लेषण

इस खंड के कथनवार प्रतिक्रिया वितरण को तालिका 5 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 5: नागरिक समृद्धि विश्लेषण — कथनवार प्रतिक्रिया वितरण (n=300)

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
राजनीतिक स्थिरता जीवन स्तर में सुधार करती है	33.3%	36.7%	16.7%	8.3%	5.0%
सरकारी पहलें जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती हैं	31.7%	38.3%	16.7%	8.3%	5.0%

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में सुधार हुआ है	31.7%	38.3%	16.7%	8.3%	5.0%
रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है	30.0%	40.0%	16.7%	8.3%	5.0%

नागरिक समृद्धि से सीधे संबंधित कथनों में राजनीतिक स्थिरता (70.0%), सरकारी पहलों द्वारा जीवन गुणवत्ता में सुधार (70.0%), शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में सुधार (70.0%), तथा रोजगार अवसरों में वृद्धि (70.0%) पर सुसंगत रूप से लगभग समान स्तर की सहमति पाई गई, जो यह दर्शाता है कि उत्तरदाता नागरिक समृद्धि को एक बहुआयामी अवधारणा — जिसमें राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक आयाम शामिल हैं — के रूप में देखते हैं।

3.5 नीति योगदान और भागीदारी

इस खंड के कथनवार प्रतिक्रिया वितरण को तालिका 6 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 6: नीति योगदान और भागीदारी — कथनवार प्रतिक्रिया वितरण (n=300)

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
नीति निर्माता विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं	36.7%	35.0%	15.0%	8.3%	5.0%
नागरिक भागीदारी शासन को बेहतर बनाती है	35.0%	36.7%	15.0%	8.3%	5.0%
SDGs के बारे में जागरूकता बेहतर परिणामों की ओर ले जाती है	30.0%	36.7%	20.0%	8.3%	5.0%
प्रभावी नीतियां नागरिक समृद्धि में सुधार करती हैं	33.3%	36.7%	16.7%	8.3%	5.0%

नीति निर्माताओं की भूमिका (71.7%) और नागरिक भागीदारी (71.7%) दोनों पर उच्च सहमति दर्ज की गई, जबकि SDG जागरूकता से संबंधित कथन पर सबसे अधिक तटस्थ प्रतिक्रिया (20.0%) तथा सबसे कम सकारात्मक प्रतिक्रिया (66.7%) दर्ज हुई। यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि यद्यपि नागरिक शासन एवं नीति-निर्माण के सामान्य सिद्धांतों से भली-भांति परिचित हैं, किन्तु सतत विकास

लक्ष्यों के औपचारिक ढांचे के बारे में जागरूकता अभी भी सीमित है — जो अधिक जन-जागरूकता अभियानों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

3.6 प्रवृत्ति विश्लेषण (2018–2025)

समय-श्रृंखला विश्लेषण से पता चलता है कि वर्ष 2018 से 2025 के बीच प्रमुख SDG-17 संकेतकों — जैसे अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी, वित्तीय सहयोग एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के प्रति सकारात्मक धारणा — में क्रमिक किन्तु सतत वृद्धि दर्ज की गई है, जो नीतिगत क्रियान्वयन एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तंत्रों के दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव को दर्शाती है।

3.7 गुणात्मक निष्कर्ष

विशेषज्ञ साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक अंतर्दृष्टि मात्रात्मक निष्कर्षों की पुष्टि एवं गहनता प्रदान करती है। विशेषज्ञों ने एकमत से राजनीतिक स्थिरता को नागरिक समृद्धि का सबसे मूलभूत आधार बताया, तथा इस बात पर जोर दिया कि पारदर्शिता, जवाबदेही एवं समावेशी निर्णय-निर्माण स्थिर शासन के आवश्यक अवयव हैं। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के संदर्भ में, विशेषज्ञों ने वित्तीय सहायता एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को SDG-17 की प्राप्ति हेतु केंद्रीय माना, किन्तु साथ ही यह भी रेखांकित किया कि कमजोर संस्थागत क्षमता, भ्रष्टाचार एवं अपर्याप्त अंतर-विभागीय समन्वय नीति क्रियान्वयन में प्रमुख बाधाएं बनी हुई हैं।

3.8 निष्कर्षों की सतत विकास लक्ष्यों से मैपिंग

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों को संबंधित सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ तालिका 7 में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 7: प्रमुख निष्कर्षों की सतत विकास लक्ष्यों से मैपिंग

निष्कर्ष	संबंधित SDG	मुख्य कारण
राजनीतिक स्थिरता एवं जीवन स्तर	SDG-16	शांति, न्याय एवं मजबूत संस्थाएं
शासन में पारदर्शिता	SDG-16 (16.6)	प्रभावी, जवाबदेह एवं पारदर्शी संस्थाएं
सामाजिक कल्याण योजनाएं	SDG-1	गरीबी उन्मूलन
आर्थिक सुधार एवं रोजगार	SDG-8	सभ्य कार्य एवं आर्थिक विकास

पर्यावरणीय नीतियां	SDG-13	जलवायु कार्रवाई
शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा पहुंच	SDG-3, SDG-4	अच्छा स्वास्थ्य एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
वैश्विक साझेदारियां एवं वित्तीय सहायता	SDG-17 (17.2, 17.3)	लक्ष्यों के लिए साझेदारी
प्रौद्योगिकी साझाकरण	SDG-17 (17.6, 17.7)	प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु सहयोग
नागरिक भागीदारी	SDG-16 (16.7)	समावेशी एवं सहभागी निर्णय-निर्माण
SDG जागरूकता	SDG-4 (4.7), SDG-17	सतत विकास हेतु शिक्षा एवं वैश्विक नागरिकता

4. निष्कर्ष

यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि राजनीतिक स्थिरता, शासन में पारदर्शिता, सरकारी नीतियां एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग नागरिक समृद्धि के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं, तथा नागरिक इन सभी आयामों को व्यापक रूप से सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों निष्कर्ष इस बात पर एकमत हैं कि सतत विकास लक्ष्य-17 के अंतर्गत वैश्विक साझेदारी को नागरिक समृद्धि की प्राप्ति हेतु एक केंद्रीय रणनीति के रूप में स्वीकार किया जाता है।

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं: (i) स्थानीय शासन संस्थाओं को वित्तीय एवं तकनीकी रूप से सशक्त बनाना, (ii) ई-शासन एवं डिजिटल पारदर्शिता तंत्रों का विस्तार करना, (iii) SDG ढांचे के बारे में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जन-जागरूकता अभियान चलाना, तथा (iv) अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तंत्रों को सुदृढ़ करना। भविष्य के शोध में एक बड़े एवं भौगोलिक रूप से अधिक विविध नमूने के साथ अनुदैर्घ्य अध्ययन के माध्यम से इन प्रतिरूपों के समय के साथ परिवर्तन की जांच की जा सकती है।

संदर्भ

- बीहरा, बी., बीहरा, पी., एवं सेठी, एन. (2024)। सतत विकास लक्ष्य-13 की प्राप्ति में नवीकरणीय ऊर्जा, हरित वित्त और राजनीतिक स्थिरता की भूमिका: उभरती अर्थव्यवस्थाओं से अनुभवजन्य अंतर्दृष्टि। *सस्टेनेबल डेवलपमेंट, 32*(1), 119–137। <https://doi.org/10.1002/sd.2657>

2. कौशिक, ए. (2023)। सतत विकास प्राप्त करने में सुशासन की भूमिका: भारत का एक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड गवर्नेंस*, 5(1), 101–106।
<https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i1b.209>
3. मैसी, ए. (2022)। सतत विकास लक्ष्यों और सुशासन के बीच संबंध। *ग्लोबल पॉलिसी*, 13(S1), 79–89। <https://doi.org/10.1111/1758-5899.13037>
4. द थ्युवेस, जे., एवं अन्य। (2025)। क्या नीतिगत समन्वय किसी को पीछे नहीं छोड़ने के उद्देश्य को पूरा कर रहा है? भारत में सतत विकास लक्ष्यों के शासन में लैंगिक असमानता का विश्लेषण। *एनवायरनमेंटल पॉलिसी एंड गवर्नेंस*। <https://doi.org/10.1002/eet.2154>
5. भारत में सतत विकास लक्ष्य-11 के स्थानीयकरण की दिशा में शासन व्यवस्था में परिवर्तन। (2023)। *वर्ल्ड डेवलपमेंट सस्टेनेबिलिटी*, 2, 100069।
<https://doi.org/10.1016/j.wds.2023.100069>
6. पोन्म्बलम, एस. (2026)। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शासन व्यवस्था। *सस्टेनेबल डेवलपमेंट*। <https://doi.org/10.1002/sd.70749>